International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-10-2024, Accepted: 21-11-2024, Published: 06-12-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 53-54

भारतीय ज्ञान परम्परा और हिंदी साहित्य

डॉ ममता गोयल[1], कुमारी आरती[2]

[1] प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

[2] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा निर्मल, निश्चल एवं पवित्र स्रोत वाहिनी की तरह से वैदिक युग से चली आती है। प्रत्येक संस्कृति की धरोहर वहां के प्राचीन ग्रंथों में निहित है। भारतीय परम्परा में संपूर्ण वाङ्मय में देखा जाए तो "शास्त्र (विज्ञान, दर्शन, इतिहास आदि), काव्य (शास्त्रों से इतर) यदि शास्त्र और काव्य में अन्तर किया जाए तो शास्त्र की भाषा रिजु (सीधी), काव्य की भाषा वक्र (व्यंजना पूर्ण) होती है। काव्य और शास्त्र दोनों ही भारतीय ज्ञान परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वैदिक एवं लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश के तटों को स्पर्श करती हुई हिन्दी तक पहुंचती है। शास्त्रों में जहां विज्ञान और दर्शन वर्णित है वहीं काव्य में परम्परा निहित है। वेद भारतीय संस्कृति, ज्ञान और सभ्यता का मूल है। उन्हीं से समस्त भाषाओं के ज्ञान का स्वरूप है। परम्परा के आधार पर संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश से विकसित होती हिन्दी संस्कृत की ही पुत्री कहलाती है। हिन्दी उसी ज्ञान को विभिन्न विधाओं के माध्यम से प्रत्येक जिज्ञासु तक पहुँचाती है। इसी ज्ञान परम्परा का निर्वहन करते हुए हिन्दी साहित्य अपने पथ पर अग्रसर है।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने विश्व को प्रभावित किया है। भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग प्राचीन जीवन मूल्य, पंच महायज्ञ, षोडश संस्कार, भारतीय आयुर्वेदिक, चिकित्सा, विज्ञान, शिक्षा पद्धति, वैदिक ज्ञान उपनिषदीय गूढ़ विधाएँ पुराणों में निहित व्यवहारिक ज्ञान संपूर्ण विश्व को अलौकिक कर रहा है। परंपरा की इस कड़ी में हिन्दी साहित्य ने भी अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। साहित्य मनुष्य की मूल भावनाओं का विषय है। हिन्दी साहित्य में समय–सापेक्ष भावनाएं व्यक्त हुई है। आचार्य शुक्ल के अनुसार– साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है।

मूल शब्दः वाङ्मय, व्यंजना, वक्र, रजू शास्त्र

भारतीय ज्ञान परंपरा विशाल समुद्र की तरह है जो निर्झरिणी की भाँति कहीं मंद कहीं तीव्र रफ्तार से बहती हुई वर्तमान समय में हमारे समक्ष है। जो वेदों, उपनिषदों से प्रवाहमान होकर हिन्दी में उपलब्ध है। वैष्णव संप्रदाय में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य भारतीय संस्कृति की परंपरा में अनमोल धरोहर हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा विकसित होकर भक्ति काल में सर्वाधिक तीव्रता से अभिव्यक्त हुई है। तुलसी एवं सूर जैसे कवियों ने मानस जैसे महाकाव्य की रचना कर उसे जन–जन तक पहुंचाया।

> संत कवियों ने भगवान के लिए अपने प्रेम के माध्यम से ईश्वर भक्ति की है। कबीर आदि ऐसे ही कवि हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा के विकसित रूप गद्य, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, एकांकी, नाटक, रिपोर्ताज, यात्रा साहित्य जन साधारण को नवीन चेतना, जागरूकता, सजगता की ओर ले जाते हैं। भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता का प्रतीक है–

"कोस–कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी" ऐसी संस्कृति जहां अनेकों भाषायें उनकी संस्कृति इतनी में इतना अलगाव होने पर भी ज्ञान ने एक मोतियों की माला की तरह पिरो रखा है। उसमें मोती अनेकों प्रकार के हैं। राम काव्य परंपरा उत्तर से दक्षिण तक अलग अलग संस्कृति का रूप लिए विद्यमान है।

चूंकि भारत में हिंदी भाषा क्षेत्र विस्तार क्षेत्रफल अपने अंदर समाहित किए है। हिन्दी भाषा ने अपनी सफलता, सरसता, सुगमता एवं सशक्तता से विश्व को अलौकिक कर रहा है।

गुरु–शिष्य परंपरा का महत्व

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु–शिष्य परंपरा का महत्वपूर्ण स्थान है। गुरुकुल परंपरा में शिष्य गुरु के आज्ञानुसार ज्ञान की विभिन्न सरणियों का अध्ययन करते थे और जीवन के अलग–अलग क्षेत्रों में अनुशासन का पालन करते हुए जीवन यापन करते थे। इस परंपरा में विद्या का सम्मान होता था और ज्ञान को अनमोल धरोहर के रूप में देखा जाता था। कबीर के यहां गुरु का बहुत महत्व है। गुरु के महत्व को रेखांकित करते हुए कबीर कहते हैं–

> गुरु गोबिंद दोऊ खड़े काके लागौं पांय। बलिहारी गुरु आपने, गोबिंद दियो मिलाय।।

मध्यकालीन समाज अज्ञानता के घने कोहरे से घिरा हुआ है। सच और झूठ का अंतर करना कठिन है। ऐसे में एक मात्र गुरु ही हैं जो अच्छे और बुरे के अंतर का ज्ञान दे सकते हैं। इसलिए समूची भक्तिकालीन कविता में गुरु के बिना किसी भी प्रकार के ज्ञान या पहचान की कल्पना करना संभव नहीं है। संत दादू दयाल के गुरु तो घट–घट में समाए हुए हैं–

> घट घट रामहिं रतन है, दादू लखै न कोई।
> सतगुरु सबदों पाइये, सहजे ही गम होइ।।

संत मलूकदास गुरु और ब्रह्म को एक समान मानते हैं। दोनों में कोई अंतर नहीं है। वे गुरु को सर्व शक्तिमान मानते हैं। गुरु ईश्वर की तरह सभी कार्यों को संपन्न करने में सक्षम हैं। गुरु इतने समर्थवान हैं कि सूई के छेद में से सुमेरु पर्वत को आरपार करा सकते हैं–

> "हमारा सतगुरु बिरले जानै,
> सुई के नाके सुमेर चलावै, सो यह रूप बखानै।"

जाति प्रथा का विरोध

मध्यकालीन संतों ने मनुष्य और मनुष्य के बीच भेद करने वाली जाति प्रथा का कठोरता के साथ विरोध किया है। कबीरदास ने

सामाजिक अन्याय, धार्मिक अंधविश्वास और जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई। उनके संदेश में सबको एक समान भाव और प्रेम से देखने की प्रेरणा मिलती है। कबीर मनुष्य और मनुष्य के बीच में खाई पैदा करने वाली जाति व्यवस्था पर कुठाराघात करते हुए पंडा, पुरोहित, मौलवी आदि के महत्व और अस्तित्व को नकारते हुए कहते हैं–

"जौ तूं बांमन बांमनी जाया।
तौ आन बाट ह्वै क्यों नहीं आया।।
जौ तूं तुरुक तुरकानी जाया।
तौ भीतर खतना क्यों न कराया।।"

वस्तुतः कबीर मानव एकता के हिमायती थे। जन्म के आधार पर श्रेष्ठता और निकृष्टता का भाव पैदा कर इंसानों के बीच फांक पैदा करने वाली सभी मान्यताओं और व्यवस्थाओं को कबीर सिरे से नकार देते हैं। कबीर के यहां प्रेम और ज्ञान महत्वपूर्ण हैं। कबीर ने जो नया पथ चुना, समाज के सुधार और पुनर्निर्माण का, उसका आधार प्रेम और ज्ञान ही है–

"जाति पांति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।।"

मानवीय एकता का मूल आधार ईश्वरीय एकता है। इस संदेश को भक्ति कविता में संतों ने प्रमुखता से उठाया है। गोस्वामी तुलसीदास ने ब्रह्म के स्वरूप सगुण–निर्गुण को लेकर उत्पन्न हुए मतभेद को दूर करते हुए रामचरितमानस में कहा है –"सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।।"

"अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।"

सगुण और निर्गुण में कुछ भी भेद नहीं है– मुनि, पुराण और वेद सभी ऐसा कहते हैं। जो निर्गुण, अरूप (निराकार), अलख (अव्यक्त) और अजन्मा है, वही भक्तों के प्रेमवश सगुण हो जाता है।

कबीरदास के उपास्य राम निर्गुण हैं जो जन्म–मरण के बंधन से परे हैं। उन्हें अनेक नामों से पुकारा जाता है जैसे– हरि, गोबिंद, केशव, माधव, गोपाल, निरंजन, रघुनाथ, सहज, शून्य, रहीम, अल्लाह, विश्वंभर आदि।

वेद और भारतीय ज्ञान परंपरा में ब्रह्म के स्वरूप पर काफी चर्चा है। सूक्ष्मता से देखा जाए तो सभी मध्यकालीन संतों–भक्तों ने अपने संदेशों के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन को समृद्ध और सरल बनाने का संदेश दिया।

परोपकार और अपरिग्रह

"ईशावास्योपनिषद्" में एक मंत्र है–
"ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यत्केन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।"

जगत् में जो कुछ स्थावर–जंगम संसार है वह सब ईश्वर के द्वारा आच्छादित है। उसके त्याग भाव से तू अपना पालन कर। किसी के धन की इच्छा न कर। अर्थात यह सारी सृष्टि ईश्वर की रची हुई है। इसलिए निजी भौतिक संपदा के प्रति आसक्ति के विचार को त्यागकर जीना चाहिए। इस तरह इस मंत्र से जो संदेश निकलता है वह है हमें त्यागपूर्ण जीवन जीना चाहिए। क्योंकि धरती के संसाधन सीमित हैं। आज मनुष्य लोभ वश ईश्वर की बनाई धरती का अत्यधिक दोहन कर रहा है। परिणाम जलवायु परिवर्तन, अनावृष्टि–अति वृष्टि, तापमान वृद्धि जैसी समस्याएं विकराल रूप धारण कर मानव अस्तित्व को ही समाप्त करने के लिए तुली हुई है। इस औपनिषदिक ज्ञान को भक्तिकालीन संतों ने अपनी कविताओं में पिरोकर जन–जन तक पहुंचाया। कबीरदास ने कहा – "साईं इतना दीजिए जामै कुटुंब समाए मैं भी भूखा न रहूं साधू न भूखा जाए।"

भक्तिकाल के जितने भी भक्त और संत कवि थे, सभी ने संयमित जीवन पर बल दिया है। इसके साथ ही प्रकृति के साथ साहचर्य संबंध के महत्व को प्रतिपादित किया है। सूरदास का समूचा काव्य गोचारण संस्कृति में पल्लवित–पुष्पित होता है। उनकी कविता मनुष्य और प्रकृति के अन्योन्याश्रय मधुर संबंध की सीख देती है। पेड–पौधे, पर्वत, पशु–पक्षी और वनस्पति के प्रति अगाध श्रद्धा सगुण और निर्गुण संतों ने अपनी कविताओं में प्रतिपादित की है। भारतीय ज्ञान परंपरा और मध्यकालीन भक्ति कविता ने भारतीय संस्कृति को उच्चतर मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिकता से समृद्ध तो किया है साथ ही जीवन के नैतिक और संयमित आचरण पर भी विशेष बल दिया है। यही नहीं तुलसीदास ने अपने ग्रंथों के माध्यम से नैतिकता, प्रेम, धर्म और भक्ति के महत्व को प्रमुखता से उजागर किया है। सूरदास की कविताओं में प्रेम का महत्व, अंतरात्मा की खोज और अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध करने का संदेश मिलता है। रामानंद ने सामाजिक बदलाव के लिए सभी को एक साथ आने की प्रेरणा दी। उनके संदेशों के माध्यम से समाज के नियमों और धर्म के प्रति विचारधारा की खुलकर समीक्षा की गई। संत नामदेव ने सर्वधर्म समानता और सामाजिक समरसता का संदेश दिया। समग्रतः भक्ति काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा की सर्वोत्तम उपलब्धि है।

सन्दर्भ सूची

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और सम्वेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, 2016
2. डॉ. नरेंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, अनुपम प्रकाशन, 2014
4. निशा अग्रवाल, भारतीय काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, 2023
5. वैदिक साहित्य और संस्कृति